टिप्पणी

7

विकास के आयाम

बाल विकास एक जटिल और सतत् प्रक्रिया है। यह एक साथ कई आयामों में होता है, जो कि उनके समग्र विकास को प्रभावित करता है।

पिछले पाठ में आपने बच्चों की वृद्धि और विकास तथा विकास के विभिन्न सिद्धांतों के बारे में पढ़ा। इस पाठ में, आप विकास के विभिन्न आयामों–शारीरिक, स्वास्थ्य एवं गत्यात्मक, संवेगात्मक, सामाजिक, नैतिक, संज्ञानात्मक तथा भाषात्मक विकास के बारे में विस्तार से पढ़ेंगे।

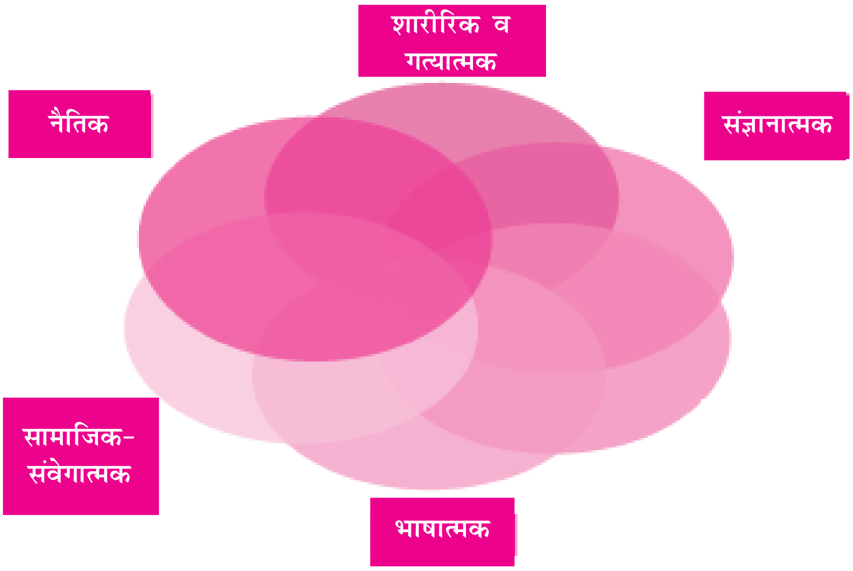

चित्र 7.1 : विकास के आयाम

अधिगम प्रतिफल

इस पाठ के अध्ययन के बाद आप–

- आयामों में से प्रत्येक की विशेषताओं पर चर्चा करते हैं; और
- विकासात्मक पड़ावों (milestone) के महत्व को चिह्नित करते हैं।

टिप्पणी

7.1 विकास के आयाम

विकास के आयाम उन क्षेत्रों या पहलुओं को इंगित करते हैं जिनमें बच्चों का विकास होता है। विकास के विभिन्न आयाम इस प्रकार हैं–

1. शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास, जिसमें स्थूल तथा सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल शामिल हैं।
2. सामाजिक-संवेगात्मक विकास का अर्थ स्वयं को समझना तथा सामाजिक वातावरण की समझ, सामाजिक रूप से स्वीकृत ढंग से संवेगों की अभिव्यक्ति और संवेगों पर नियंत्रण करना है।
3. नैतिक विकास उचित और अनुचित की समझ से संबंधित है।
4. संज्ञानात्मक विकास विभिन्न अवधारणाओं एवं प्रक्रिया को सोचने एवं समझने से संबंधित है।
5. भाषा विकास, संचार, सुनने से संबंधित आकस्मिक/प्रारंभिक साक्षरता, समझना, मौखिक/वाचिक कुशलता वाले कौशल और लेखन पर केन्द्रित हैं।

आइए, हम विकास के इन आयामों के बारे में विस्तार से अध्ययन करते हैं।

7.1.1 शारीरिक और गत्यात्मक विकास

शारीरिक वृद्धि और विकास में शरीर की संरचना के अनुपात में ऊँचाई, वजन और वृद्धि शामिल है। इसमें हड्डियों के विकास को भी शामिल किया जाता है। शरीर की संपूर्ण संरचना हड्डियों के आकार, अनुपात तथा सघनता पर निर्भर करती है। यह शरीर की बनावट एवं शक्ल-सूरत को निर्धारित करता है। आप पिछले अध्याय में पढ़ चुके हैं कि शारीरिक विकास दो तरीकों से होता है। समीप-दूराभिमुख (प्रोक्सिमोडिस्टल) तथा शिर:पदाभिमुख (सेफ्लोक्यूडल) क्रम। शारीरिक विकास न केवल शरीर में होने वाले बाह्य परिवर्तनों बल्कि आंतरिक अंगों में होने वाले परिवर्तनों को भी शामिल करता है। यह आंतरिक अंगों में परिवर्तन तथा परिपक्वता को भी शामिल करता है। जैसे-जैसे बच्चों में शारीरिक रूप से वृद्धि होती है, मस्तिष्क सहित आंतरिक अंगों तथा केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र में भी विकास होता है।

शारीरिक विकास को सूक्ष्म व स्थूल गत्यात्मक कौशलों के द्वारा बेहतर ढंग से समझा जा सकता है। गत्यात्मक कौशल बच्चों में विकसित होने वाली वे शारीरिक योग्यताएँ हैं, जो उनकी शारीरिक गतिविधियों को नियंत्रित करने में मदद करती हैं। अपेक्षाकृत कम समय में बच्चों में साधारण गत्यात्मक कौशलों का विकास हो जाता है।

बच्चों में दो प्रकार के गत्यात्मक कौशलों का विकास होता है– स्थूल गत्यात्मक कौशल तथा सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल। स्थूल गत्यात्मक कौशल बड़ी माँसपेशियों को शामिल करता है तथा बच्चों की क्रियाओं, जैसे रेंगना, खड़े होना, चलना, चढ़ना, दौड़ना आदि को संतुलित करता है। सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल छोटी माँसपेशियों को शामिल करता है तथा हाथ और अंगुलियों को प्रभावशाली रूप से इस्तेमाल एवं प्रयोग करने की योग्यता प्रदान करता है। सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल सामान्यत: आँख और हाथ के समन्वय को शामिल करता है। जिससे यह योग्यता होती है कि वह आँखों ने जो देखा है, उसका हाथ की गतिविधियों के साथ मिलान करती है। सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों का विकास बच्चों को चीजों को पकड़ने जैसे कप, क्रेयॉन तथा किताब के

पन्ने पलटने, बटन बंद करने, जिप बंद करने, ड्राइंग करने तथा लिखने इत्यादि में मदद करता है। साधारण शब्दों में सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल बच्चों को कसकर पकड़ने, ठहरने, गति करने तथा विभिन्न वस्तुओं को संभालने में मदद करती है। वयस्कों की तरह बच्चों की सभी गतिविधियों में सूक्ष्म तथा स्थूल गत्यात्मक कौशलों के संयोजन की आवश्यकता होती है।

शारीरिक विकास जीवन पर्यन्त चलने वाली एक प्रक्रिया है हालाँकि वृद्धि की प्रकृति तथा दर विकास की अवस्थाओं के अनुसार भिन्न हो सकती है। प्रत्येक बच्चा अपनी गति या रफ़्तार से विकसित होता है। कुछ बच्चे तेजी से बढ़ते हैं जबकि कुछ उतनी तेजी से नहीं बढ़ते, परंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि वे शारीरिक रूप से अपरिपक्व या अविकसित हैं। प्रत्येक बच्चा अपने आप में अलग है, इसलिए जीन का समूह (genomes) तथा वातावरणीय दशाएँ समान होने पर भी बच्चों में व्यक्तिगत भिन्नता देखने को मिलती है। इसके साथ-साथ शारीरिक विकास में लैंगिक विभिन्नताएँ भी देखी जा सकती हैं।

चित्र 7.2 : सूक्ष्म गत्यात्मक कौशलों का विकास

पाठगत प्रश्न 7.1

(क) सूक्ष्म तथा स्थूल गत्यात्मक कौशलों का क्या अर्थ है?

(ख) बच्चों के स्थूल व सूक्ष्म गत्यात्मक विकास को बढ़ावा देने के लिए दो गतिविधि सुझाइए जिन्हें माता-पिता अपने घर पर कर सकें।

7.1.2 सामाजिक-संवेगात्मक विकास

क्या आप बच्चों और प्रौढ़ों से अलग-अलग तरीकों से बात करते हैं? क्या आपका अपने शिक्षक और दोस्त से बात करने का तरीका भिन्न होता है? आपने अलग व्यक्ति से अलग तरीके का व्यवहार करना, जो कि उस व्यक्ति से आपके संबंध पर निर्भर है, कैसे सीखा? क्या आप सभी परिस्थितियों में समान व्यवहार करते हैं या भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में व्यवहार भी बदल जाता है? जब बच्चा इस जटिल समाज में कदम रखता है, तो वह समाज के नियमों एवं कानूनों को नहीं जानता। लेकिन धीरे-धीरे वह दूसरों के साथ बातचीत करके तथा दूसरों से संबंध स्थापित करके सामाजिक नियमों का पालन करना सीख जाता है। हम विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में कैसे दूसरों के साथ संबंध स्थापित करते हैं और समाज द्वारा बनाए गए नियमों और कानूनों का पालन करना सीखते हैं। यह सामाजिक विकास के अंतर्गत आता है। इसमें सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना तथा शामिल होना और सामाजिक समूहों का हिस्सा होने के अर्थ को समझना भी शामिल है। बच्चा एक सामाजिक प्राणी है और उसे भरपूर जीवन जीने के लिए अन्य प्राणियों के साथ जुड़ने की आवश्यकता है।

टिप्पणी

संवेगात्मक विकास बच्चों की भावनाओं तथा संवेगों के विकास का उल्लेख करता है। कुछ संवेग जैसे खुशी, डर और क्रोध आदि को मूलभूत बुनियादी संवेग कहा जा सकता है, क्योंकि व्यक्ति के चेहरे के भावों को देखकर इनका अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। कुछ संवेग जैसे लज्जा/शर्म, अपराध तथा ईर्ष्या करना आदि को जटिल संवेगों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है क्योंकि इन्हें किसी के चेहरे के भावों को देखकर आसानी से नहीं पहचाना जा सकता है। बच्चे कुछ मूलभूत संवेगों के साथ जन्म लेते हैं और जटिल संवेगों को समय के साथ विकसित करते हैं।

क्या आपने कभी नीचे दिए गए संवेगों को व्यक्त करते समय अपने में किसी प्रकार के बदलाव का अनुभव किया है। कृपया बदलाव के बारे में लिखें–

क्रोध ....

....

डर ....

....

उदासी ....

....

क्या आपको याद है, जब आप 6 साल के थे तब अपने माता–पिता को अपना प्यार और गुस्सा दिखाने के लिए कौन से तरीके अपनाते थे? अब (बड़े होने पर) आप उन्हीं संवेगों को किस प्रकार व्यक्त करते हैं? क्या आप अपने माता–पिता के प्रति संवेगों को व्यक्त करते समय कोई बदलाव महसूस करते हैं? यह स्पष्ट करता है कि संवेगों तथा व्यवहारों को व्यक्त करना समय के साथ–साथ विकसित होता है। इनमें से कुछ बदलाव हमारे संवेगात्मक परिपक्वता तथा कुछ वातावरण से प्राप्त अधिगम के परिणामस्वरूप हो सकते हैं।

संवेगों के प्रकटीकरण में सांस्कृतिक भिन्नताएँ भी अपना अस्तित्व रख सकती हैं क्योंकि प्रत्येक संस्कृति अपने बच्चे को अपने संवेगों को प्रकट करने के लिए अलग–अलग तरीके सिखाती है। लिंग भेद के कारण भी संवेगों के प्रकटीकरण में अंतर आता है।

टिप्पणी

7.1.2.1 विभिन्न अवस्थाओं में सामाजिक - संवेगात्मक विकास

- **शैशवावस्था**

शिशु अपने आस-पास के लोगों से मुस्कुराकर, रोकर, बुद्बुदाकर तथा किलकिलाकर बातचीत करते हैं। यह सभी क्रियाएँ शिशुओं की अन्य लोगों के साथ बातचीत को बनाए रखती हैं। जब शिशु को सकारात्मक प्रतिक्रिया तथा प्रेरणा मिलती है तो वह सामाजिक रूप से विकसित होने के लिए प्रोत्साहित होता है। 6-8 महीने में शिशु में अपनेपन की भावना का विकास होता है तथा वह अपने माता-पिता तथा अन्य परिचित लोगों से जुड़ने लगता है। ऐसा देखा जाता है कि शिशु अजनबी लोगों को देखकर असहजता का अनुभव करता है जैसे प्रथम वर्ष के पूरा होने पर भी उसमें अपने देखभाल करने वाले लोगों से अलग होने का डर बना रहता है। यह चिंता धीरे-धीरे कम होने लगती है और शिशु में विशेष प्रकार का लगाव विकसित होने लगता है। 2 वर्ष की आयु तक बच्चे अपने माता-पिता से थोड़े अलग होने लगते हैं और जिस काम को वे नहीं करना चाहते उसे 'न' कहकर अपनी स्वायत्तता दिखाना सीख जाते हैं।

- **प्रारंभिक बाल्यावस्था**

2 से 5 वर्ष की आयु में बच्चों में स्वयं के प्रति जागरुकता विकसित होती है। उनमें अभिवृत्ति, पसंद-नापसंद तथा कार्य करने के तरीके विकसित होते हैं। समाजीकरण एक प्रक्रिया है जहाँ बच्चे समाज का एक जिम्मेदार व्यक्ति बनने के लिए कौशल अर्जित करते हैं। मुख्यत: बच्चे, अपने माता-पिता के द्वारा सामाजिक होते हैं जो उन्हें सही एवं गलत में अंतर को समझाते हैं तथा उनमें अच्छा आचरण विकसित करने में सहायता करते हैं जैसाकि बच्चे अपने माता-पिता का अवलोकन तथा उनका अनुकरण करते हैं जो उनके आदर्श (रोल मॉडल) होते हैं, यह सुदृढ़ पहचान प्रक्रिया समाजीकरण में सहायता करती है।

पूर्व विद्यालयी बच्चों का सामाजिक संसार बढ़ता जाता है और वे अपने इस संसार में स्कूल तथा पड़ोस के समकक्ष बच्चों को शामिल करते हैं। वे अपने समकक्ष बच्चों के साथ बातचीत तथा सहयोगात्मक खेलों में व्यस्त रहने लगते हैं। जो दूसरों से संबंध रखने तथा सामाजिक परिस्थितियों को समझने का बेहतर आधार प्रदान करता है। वह लिंग के आधार पर अपनी मनोवैज्ञानिक पहचान बनाना शुरू करते हैं और उस लिंग आधारित उपयुक्त व्यवहार करने लगते हैं। लिंग आधारित भूमिकाओं की पहचान अनेक कारकों जैसेकि लिंगों के मध्य जैविक भिन्नता तथा लड़के और लड़कियों के माता-पिता एवं अन्य द्वारा समाजीकरण के तरीकों पर निर्भर करता है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 7.2

दिए गए पहेली से आप संवेगों से संबंधित शब्द ढूढ़िए।

W	X	Y	Z	J	E	A	L	O	U	S	Y	K	L	M
A	B	C	D	O	F	S	H	O	C	K	N	N	O	P
H	A	P	P	Y	O	U	Q	H	O	P	E	S	Y	F
O	B	A	N	G	E	R	R	L	T	P	R	I	D	E
P	W	I	H	J	U	P	S	E	T	K	V	M	B	A
E	O	N	S	Y	C	R	A	G	E	P	O	L	Y	R
F	R	D	F	G	H	I	N	O	K	T	U	S	Z	O
U	R	H	J	B	D	S	A	D	O	B	S	K	J	C
L	Y	F	L	O	V	E	Q	Z	T	U	W	V	B	A
S	C	A	R	E	D	F	J	R	M	O	K	S	T	L
E	M	B	A	R	R	A	S	S	M	E	N	T	F	M

7.1.3 नैतिक विकास

'मोरल' शब्द 'मोर्स' शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है शिष्टाचार या आदतें। सरल शब्दों में, यह सही और गलत की समझ है। इसमें नैतिक व्यवहार, नैतिक तर्क और निर्णय शामिल होते हैं। नैतिक व्यवहार, नैतिक रूप से सही कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। नैतिक तर्क, सही और गलत विकल्प के विमर्श को संदर्भित करता है। यह इस बात पर आधारित है कि हम समस्या से संबंधित कई दृष्टिकोण को समझ पा रहें या नहीं।

आइए, बच्चों में नैतिक तर्क के विकास के बारे में पढ़ें।

7.1.3.1 बच्चों में नैतिक तर्क का विकास

बहुत से मनोवैज्ञानिकों ने बच्चों में नैतिक विकास की व्याख्या की है। आइए, हम पियाजे तथा कोहलबर्ग द्वारा सुझाई गई नैतिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं के बारे में संक्षिप्त में अध्ययन करें।

पियाजे के अनुसार, बच्चों में नैतिक विकास खेल के दौरान, खेल के नियमों के प्रति उनकी समझ का अवलोकन करके समझा जा सकता है। वह बच्चों के नैतिक विकास की दो अवस्थाओं का उल्लेख करते हैं– नियम पालन की नैतिकता (Heteronomous) तथा रजामंदी की नैतिकता (Autonomous)।

नियम पालन की नैतिकता (हेट्रोजिनियस)	बच्चों का मानना है कि नियम सार्वभौमिक हैं, जो किसी बाहरी प्राधिकरण के द्वारा तय किये गये है एवं थोपे गए हैं। वे मानते हैं कि नियमों को बदला नहीं जा सकता परन्तु जो नियमों को तोड़ेगा उसे दण्ड अवश्य मिलेगा। क्योंकि बच्चे नैतिक विकास की इस अवस्था में नियमों की अपरिवर्तनशीलता को मानते हैं, वे कभी भी इन नियमों के परिवर्तन के प्रति कोई लचीलापन नहीं दिखाते।
रजामंदी की नैतिकता (ऑटोनोमस)	जैसे-जैसे बच्चे बड़े होते हैं उनकी नैतिकता की समझ ज्यादा लचीली होने लगती है। बच्चे विश्वास करने लगते हैं तथा वह विश्वास करते हैं कि नियम सभी के लोगों के लिए होते हैं, तथा यदि ऐसा नहीं है तो 'सभी की सहमति से इन्हें बदला जा सकता है'।

लॉरेंस कोहलबर्ग के अनुसार, नैतिक विकास के तीन चरण हैं–

- पूर्व पारंपरिक नैतिकता
- पारंपरिक नैतिकता
- उत्तर पारंपरिक नैतिकता

पूर्व पारंपरिक नैतिक स्तर में, बच्चे अपने आस-पास के लोगों से सही और गलत की समझ सीखते हैं। बच्चे का आचरण बाह्य कारकों जैसे स्वीकृति और अस्वीकृति या पुरस्कार और दंड के द्वारा निश्चित होता हैं। इस प्रकार बच्चे का व्यवहार आज्ञा-पालन तथा दंड की ओर प्रवृत होता है। जैसे ही बच्चा मध्य बाल्यावस्था में पहुँचता है, उसकी पारंपरिक संबंधों को तथा नैतिक आचरण को समझने की क्षमता बढ़ जाती है तथा यह किशोरावस्था तक लगातार विकसित होती रहती है।

पारंपरिक नैतिक अवस्था में बच्चे यह विश्वास करते हैं कि अगर नियम समाज की भलाई के लिए नहीं हैं तो उन्हें बदला जा सकता है।

उत्तर-पारंपरिक अवस्था में बच्चा सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों या अपनी आत्मा की आवाज़ पर चलता है, बाह्य प्रभावों से प्रभावित नहीं होता। एक व्यक्ति सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांतों को जैसे जीवनमूल्य को मूल्यों के क्रम में सर्वोपरि रखता है और उसके लिए नियमों या कानूनों को तोड़ भी सकता है।

पाठगत प्रश्न 7.3

(1) सही विकल्प चुनिए–

(क) नैतिक विकास का सिद्धान्त (तीन अवस्थाएँ) दिया गया–

☐ कोहलबर्ग

☐ पियाजे

☐ एरिक्सन

टिप्पणी

(ख) वह अवस्था जब बच्चा समाज के नैतिक नियमों को स्वीकार करने से पहले सही और गलत के प्रति अपनी समझ को भी शामिल करता है।

- [ ] उत्तर-पारंपरिक नैतिकता
- [ ] पारंपरिक नैतिकता
- [ ] पूर्व-पारंपरिक नैतिकता

(2) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) पियाजे ने नैतिकता .... और .... के द्वारा व्यक्त की।

(ख) नियम पालन की नैतिकता में बच्चे मानते हैं कि नियम ....एवं .... है।

7.1.4 संज्ञानात्मक विकास

इसमें जानना, सोचना, याद रखना, पहचानना, वर्गीकरण करना तथा कल्पना करना आदि प्रक्रियाएँ शामिल हैं। स्विस मनोवैज्ञानिक पियाजे के अनुसार बच्चे नए विचारों तथा चुनौतियों को अनुभव कर संसार के बारे में अपनी समझ बनाते हैं। वह आस-पास के साथ पारस्परिक क्रिया के द्वारा अपने ज्ञान का सृजन करते हैं। संज्ञानात्मक विकास, बच्चे के परिपक्व या प्रौढ़ होने के साथ बढ़ता जाता है।

पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास को चार अवस्थाओं में बाँटा है। यह अवस्थाएँ सभी व्यक्तियों में समान रूप से प्रकट होती है, किसी भी एक अवस्था को छोड़ा नहीं जा सकता। फिर भी जिस गति से बच्चे इन अवस्थाओं से गुजरते हैं, उसमें व्यक्तिगत अंतर कुछ सीमाओं के भीतर भिन्न हो सकते हैं।

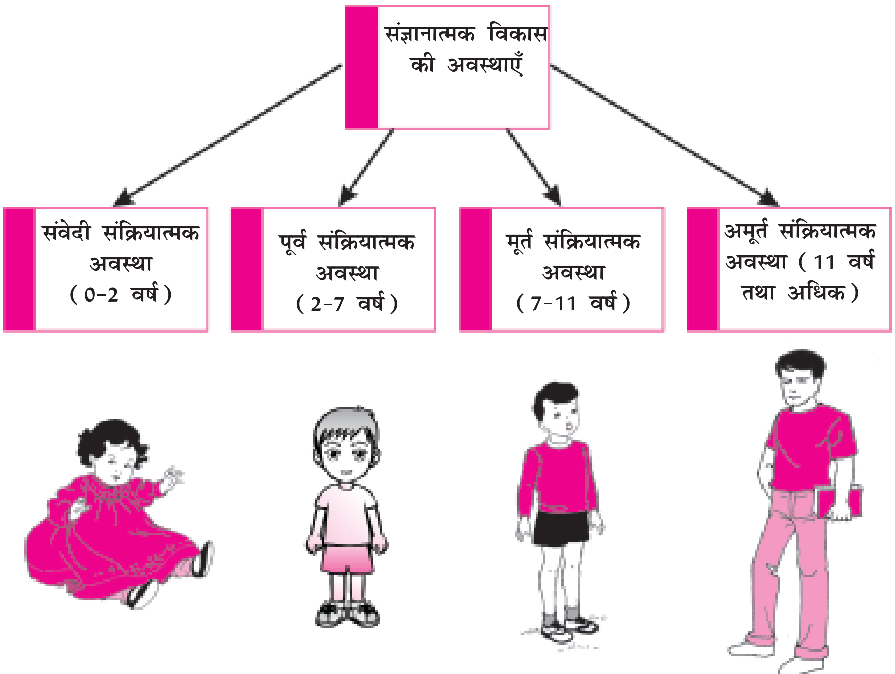

चित्र 7.3 : संज्ञानात्मक विकास की चार अवस्थाएँ

- **संवेदी संक्रियात्मक अवस्था (0-2 वर्ष)**

पियाजे के द्वारा प्रस्तुत सज्ञानात्मक विकास की पहली अवस्था को संवेदी संक्रियात्मक अवस्था कहते हैं। सज्ञानात्मक विकास का यह चरण जन्म से लेकर दो वर्ष की अवधि में पूरा होता है। पियाजे मानते थे कि शिशु या बच्चा सक्रिय रूप से सीखने वाला होता है जो कि वातावरण में होने वाले उद्दीपकों या प्रेरणा के प्रति उत्साहपूर्वक प्रतिक्रिया करता है। वह तीव्रता से सीखता है और वातावरण में विभिन्न चीजों में अंतर करने लगता है। उदाहरण के तौर पर, एक शिशु माँ के दूध और चम्मच के बीच अंतर करना सीख जाता है और दोनों के लिए अलग तरीके से मुँह खोलता है।

शिशुओं की जन्म के साथ प्रतिवर्ती क्रियाएँ जैसे चूसना तथा वस्तुओं को पकड़ना आदि संज्ञानात्मक विकास का आधार बन जाती हैं। समय के साथ वे स्वैच्छिक रूप से कार्य करना सीखते हैं। शिशु अपने वातावरण में अन्य व्यक्तियों का अनुकरण करना सीखते हैं। जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं वे ऐसे व्यक्ति का भी अनुकरण करते हैं जो उस समय वहाँ उपस्थित नहीं होता है। इसे ही डैफर्ड (deffered) अनुकरण कहते हैं।

धीरे-धीरे बच्चों में वस्तु स्थायीत्व का गुण विकसित होता है अर्थात यह समझ की वह वस्तु तब भी अस्तित्व में होती है जब वह हमें दिखायी नहीं दे रही होता है। उदाहरण के लिए, चार महीने का बच्चा गेंद के आँखों से ओझल होने पर उसे नहीं ढूंढता परन्तु 15 माह का बच्चा गेंद को अवश्य ढूंढेगा।

- **पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था (2-7 वर्ष)**

यह संज्ञानात्मक विकास की दूसरी अवस्था है जो कि मूलत: पूर्व-तर्क संगत अवस्था है जिसमें बच्चे की तर्क करने की शक्ति पूर्ण रूप से विकसित नहीं होती। यह 2-7 वर्ष तक की आयु के बच्चों में होती है। कुछ संज्ञानात्मक सीमाएँ इस अवस्था पर बच्चों की संज्ञान का लक्षण प्रस्तुत करती हैं, वे हैं–

आध्यात्मिक और अतार्किक सोच: इस अवस्था के बच्चे सोचते हैं कि निर्जीव वस्तुओं में भी जीवन होता है वे प्रत्येक गतिमान वस्तु को जीवित मानते हैं। उदाहरण के लिए- आपने बच्चों को यह तर्क देते सुना होगा कि *अगर कोई वस्तु गतिमान है तो वह जीवित है अगर वह गतिमान नहीं है तो वह जीवित नहीं है। इसीलिए बच्चा इस अवस्था में, बादल को जीवित चीज मानता है।*

आत्मकेन्द्रित: बच्चे सोचते हैं कि सभी उनकी तरह सोचते हैं और सभी कुछ जो वह सोचता या करता है, वह ठीक है, और दूसरे के दृष्टिकोण को सही नहीं मानता है।

विपरीत या पलट कर सोचने की शक्ति: बच्चे किसी भी गतिविधि में इस क्षमता को समझ नहीं पाते, कि वे किसी घटना के वास्तविक प्रारंभिक बिंदु पर अनुगम करके पहुँच सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, अगर एक लंबे गिलास से पानी को एक चौड़े बर्तन में उड़ेला जाए तो अपनी पहली

टिप्पणी

स्थिति में वापिस लाने के लिए पानी को वापिस लंबे गिलास में डाला जा सकता है। बच्चों में इस प्रकार की सोचने की क्षमता का अभाव पाया जाता है।

संरक्षण (Conservation): इस अवस्था में बच्चों में संरक्षण करने की क्षमता का अभाव पाया जाता है। ऐसा तब होता है जब बच्चा यह समझने में असफल होता है कि वस्तु की बाह्य आकृति बदलती है, परंतु वस्तु की भौतिक प्रकृति में कोई परिवर्तन नहीं आता, वह पहले जैसी ही रहती है। उदाहरण के लिए, अगर हम पानी की समान मात्रा को एक लम्बे और एक चौड़े, दो गिलासों में उड़ेले और बच्चे से पूछें कि किस गिलास में पानी ज्यादा है। बच्चे का इशारा उस गिलास की तरह होगा जिसमें उसे पानी ज्यादा लगता है।

इन्हीं क्षमताओं के अभाव के कारण बच्चे के लिए विविध परिप्रेक्ष्य में परिस्थितियों को समझना तथा एक से अधिक विशेषता वाली वस्तु को वर्गीकृत करना कठिन हो जाता है।

- **मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था (7-11 वर्ष)**

मूर्त-संक्रियात्मक अवस्था की अवधि 7 वर्ष से 11 वर्ष के बीच होती है। इस अवस्था में पूर्व संक्रियात्मक अवस्था का अन्त हो जाता है। बच्चों में तर्क शक्ति का विकास होता है परंतु वे काल्पनिक परिस्थितियों में तर्क शक्ति का प्रयोग करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। उनके तर्क मूर्त वस्तु या परिस्थितियों की ठोस अवलोकित विशेषताओं तक ही सीमित होते हैं। बच्चे अब दूसरे लोगों के विचारों को समझने के योग्य हो जाते हैं।

बच्चों का **विकेन्द्रित** होना मूर्त संक्रियात्मक अवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। इस अवस्था में, बच्चों की समझ वस्तु के केवल एक पहलू पर केंद्रित नहीं रहती। वर्गीकरण करते समय वे एक से अधिक पहलुओं को ध्यान में रख सकते हैं। उनके पास विचारों को विपरीत या पलट कर सोचने की शक्ति है।

अपनी एक और क्षमता **क्रमबद्धता** भी वह इस आयु तक सीख जाता है। बच्चे अब वस्तुओं को उनकी परिभाषित विशेषताओं के आधार पर क्रमबद्ध कर सकते हैं। यह गुण क्रमबद्धता कहलाता है। उदाहरण के लिए, वे विभिन्न आकार की पेन्सिलों के समूह को घटते या बढ़ते क्रम में लगा सकते हैं।

यह सभी विशेषताएँ संज्ञानात्मक विकास की पूर्व से क्रियात्मक अवस्था वाले बच्चों की तुलना में उन्हें बेहतर समस्या समाधानकर्ता बनाती है।

- **अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था (11 वर्ष व अधिक)**

अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था 11 वर्ष से आरम्भ होती है। यहाँ किशोर उच्च मानसिक क्षमताओं वाले कार्य करने के योग्य हो जाते हैं। उनके विचारों में लचीलापन होता है तथा वे जटिल समस्याओं को भी तर्कशक्ति का इस्तेमाल कर उनके संभावित हल खोज सकते हैं। अमूर्त

विचारों की एक महत्त्वूर्ण विशेषता परिकल्पनात्मक तथा निगमनात्मक तर्क शक्ति के प्रदर्शन से भी है। किशोर परिकल्पना कर सकते हैं तथा किसी **अमूर्त समस्या के संभावित समाधान** खोज सकते हैं तथा उनमें से सबसे सही समाधान का चयन भी कर सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 7.4

(1) कॉलम (क) को कॉलम (ख) से मिलाएँ–

कॉलम (क)	**कॉलम (ख)**
(क) अगर वह गतिमान है तो वह जीवित है	(i) शैशवावस्था
(ख) पकड़ना, चूसना, आँख को झपकाना	(ii) एनिमिस्टिक सोच
(ग) परिकल्पित/निगमनात्मक तर्कशक्ति	(iii) पियाजे
(घ) डेफर्ड अनुकरण	(iv) किशोरावस्था
(ङ) संज्ञानात्मक सिद्धांत	(v) प्रतिवर्ती क्रियाएँ

(2) खाली स्थान भरिए–

(क) संज्ञानात्मक विकास को चार अवस्थाओं में बाँटा जा सकता है ...., ..., और ....।

(ख) वह योग्यता जो यह समझने में मदद करती है कि बाह्य आवरण में परिवर्तन होता है परंतु भौतिक विशेषताएँ समान ही रहती है, ... कहलाता है।

(ग) जो मैं सोच रहा हूँ और जो मैं जानता है, सभी वही समान रूप से सोच रहे हैं, बच्चे की यह सोच ....की ओर इशारा करता है।

(घ) किसी का अनुकरण करना जब वह उपस्थित न हो .... कहलाता है।

(ङ) किसी परिकल्पनात्मक समस्या के सभी संभावित समाधानों में से सबसे सही समाधान को चुनना, ... कहलाता है।

7.1.5 भाषायी विकास, संप्रेषण और निर्गत साक्षरता

भाषा मानव जाति की एक प्रमुख विशेषता मानी जाती है, यही वह योग्यता है जो एक मानव को अन्य जीवों से अलग करती है। समाज में मनुष्य, अपनी भाषायी योग्यता का उपयोग विचारों को संप्रेषित करने, अपने भावों को साझा करने, एक-दूसरे के मन को समझने तथा सामाजिक संबंध स्थापित करने में करते हैं। भाषा चिन्तन करने, सीखने तथा आसपास के संसार को समझने का प्रमुख माध्यम है। भाषा अतीत की घटनाओं का चिन्तन करके भविष्य की योजना तैयार करने में सहायता करती है। भाषा काम करने की रणनीति तथा विचारों के जोड़-तोड़ का मूल्यांकन करने में भी मदद करती है। मुख्य रूप से, भाषा एक उपकरण के रूप में अनुभूति और इसके को समझने में विपरीत सहयोग प्रदान करती है।

टिप्पणी

छोटे बच्चों के विकास के लिए भाषा बहुत ही महत्वपूर्ण है। भाषा का विकास मस्तिष्क की वृद्धि तथा परिपक्वता को दर्शाता है। जीवन के प्रारंभिक वर्ष भाषा विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। जन्म से 6 वर्ष की आयु तक बच्चों में भाषा का विकास तेज गति से होता है। कोई भी मौखिक प्रेरक जो इस आयु में दिया जाता है, बच्चे पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। सामान्यत: भाषा का विकास सभी मनुष्यों में समान रूप से होता है, परंतु आयु तथा गति जिससे बच्चा भाषा के विकास के प्रतिमान पर पहुँचता है, भिन्न-भिन्न होता है। सामान्यत: लड़कियों में भाषा का विकास लड़कों की अपेक्षा तेजी से होता है, हालाँकि बाद में दोनों भाषा की जटिलताओं को समान रूप से प्राप्त करते हैं। भाषा सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने द्वारा ग्रहण करके एवं अभिव्यक्ति करके सीखी जाती है।

7.1.5.1 भाषा का विकास

जन्म के बाद, शिशु हँसकर, रोकर, किलकिलाने की ध्वनि के साथ संप्रेषण प्रारंभ करते हैं। वे अपनी बात इशारों के माध्यम से समझाते हैं। 4 महीने की आयु तक, इन ध्वनियों की प्रकृति बदल जाती है और शिशु अपनी मौखिक क्षमता को अलग-अलग आवाजों से प्रदर्शित करने लगता है। आयु के प्रारंभ के 6-7 महीने में कूकने की ध्वनि वास्तविक भाषा जैसे तुतलाना (उदाहरण-बाबा, मामा आदि) में विकसित हो जाती है।

(I) संप्रेषण की पूर्व भाषा

(i) रोना (ii) किलकिलाना तथा तुतलाना (iii) इशारे

(II) संप्रेषण की भाषा

(iv) बोध (v) उच्चारण (vi) शब्द भंडार (vii) वाक्य रचना

बच्चे भाषा के प्रयोग से पहले उसे अच्छी तरह समझना सीखते हैं। वे पहले भाषा को समझते हैं, फिर उसका स्वयं प्रयोग करते हैं। आपने इस बात पर अवश्य ध्यान दिया होगा कि प्रारंभिक वर्षों में बच्चों की भाषा स्पष्ट नहीं होती परंतु जल्दी ही उनका उच्चारण स्पष्ट होता जाता है। आयु के साथ उनका शब्द भंडार भी बढ़ता जाता है। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में जो शब्द बच्चे अपने शब्द भंडार में जोड़ते हैं वे अर्थपूर्ण होते हैं। वह तेजी से नए शब्दों को ग्रहण कर लेते और नए सीखे गए शब्दों को शुरू में बच्चे दो या तीन शब्दों को जोड़कर अर्थपूर्ण वाक्यांश बना लेते हैं (उदाहरण के लिए - खाना दो) और बाद में तीन से अधिक शब्द जोड़कर एक छोटा वाक्य बनाते हैं। धीरे-धीरे बच्चा, भाषा संबंधी योग्यता को सीखकर एक जटिल वाक्य की रचना कर लेता है। इसके साथ समझ जाती है कि मध्य बाल्यावस्था में वह भाषा में इस्तेमाल होने वाले सामाजिक नियमों को सीख लेता हैं। उनके द्वारा भिन्न-भिन्न लोगों के साथ बोले जाने वाली भाषा भिन्न-भिन्न हो सकती है और साथ ही भिन्न-भिन्न स्थानों पर बोली जाने वाली भाषा भी भिन्न हो सकती है। वह माता-पिता, शिक्षक तथा अपने बड़ों से एक निश्चित प्रकार की भाषा बोलते हैं तथा अपने सहपाठियों के साथ अलग प्रकार की भाषा का प्रयोग करने के योग्य हो जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 7.5

(1) खाली स्थानों को भरिए–

(क) बच्चों में शब्दों के प्रयोग से पहले .... विकसित होता है।

(ख) लोगों के साथ बच्चों की बातचीत .... से शुरू होती हैं।

(ग) जीवन के प्रारंभिक वर्षों को भाषा के विकास के लिए .... काल माना जाता है।

(घ) .... तथा .... दोनों भाषा होती है।

(2) कथन के आगे सत्य अथवा असत्य लिखिए–

(क) बच्चों में शब्दों के प्रयोग से पहले बोध विकसित होती है।

(ख) प्रारम्भिक उत्प्रेरण बाद के भाषायी विकास के लिए आवश्यक नहीं होता है।

(ग) तुतलाना – किलकिलाना से पहले प्रारंभ होता है।

गतिविधि 7.1

'बच्चों में समग्र विकास लाने के लिए विकास के सभी आयामों का महत्व' विषय पर अपने समुदाय में जागरुकता लाने के लिए एक पोस्टर/लेआउट/पैम्फ्लेट तैयार करें।

आपने क्या सीखा

इस पाठ में आपने सीखा कि–

- विभिन्न अवस्थाओं में बच्चों के विभिन्न आयामों का विकास होता है।
- शारीरिक और गत्यात्मक विकास के अन्तर्गत समग्र शारीरिक विकास तथा स्थूल एवं सूक्ष्म गत्यात्मक विकास आता है।
- सामाजिक संवेगात्मक विकास में बच्चा स्वयं तथा समाज के बीच सम्बन्ध स्थापित करना और संवेदनाओं को समझना एवं नियंत्रण करना सीखता है।
- नैतिक विकास सही और गलत की भावना को दर्शाता है। नैतिक व्यवहार और तार्किकता भी इसी के अन्तर्गत आते हैं।
- संज्ञानात्मक विकास सोच, समझ और अवधारणा निर्माण को दर्शाता है।
- प्रारंभिक वर्षों में बच्चा सुनकर, समझकर, बोलकर और लिखकर भाषा सीखता है और संवाद करना सीखता है।

टिप्पणी

पाठांत प्रश्न

1. विकास के आयामों का क्या अर्थ है? विकास के किन्हीं दो आयामों की विस्तृत चर्चा कीजिए।
2. बच्चों का शारीरिक विकास किस प्रकार होता है?
3. पियाजे और कोहलबर्ग द्वारा बताए गए नैतिक विकास के स्तरों की व्याख्या कीजिए।
4. बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के स्तरों की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।
5. मनुष्य के लिए भाषा के महत्व की चर्चा कीजिए।

पाठान्त प्रश्नों के उत्तर

7.1

1. स्थूल गत्यात्मक कौशल में बड़ी माँसपेशियों को शामिल करते हैं जो बच्चों की क्रियाओं को जैसे- रेंगना, खड़े होना, चलना, चढ़ना, दौड़ना और कूदना को नियंत्रित करता है। सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल में छोटी माँसपेशियों को शामिल करते हैं जिसमें बच्चे अपने हाथों एवं अँगुलियों की योग्यता का उपयोग रँगने, चित्र बनाने में करते हैं।
2. स्थूल गत्यात्मक विकास जैसे चढ़ना, दौड़ना, पकड़ना, उछलना, कूदना, झूलना।

   सूक्ष्म गत्यात्मक विकास जैसे चित्र बनाना, रँगना, बुनना, चिपकाना, पेपर मोड़ना, मूर्ति बनाना।

7.2

W	X	Y	Z	J	E	A	L	O	U	S	Y	K	L	M
A	B	C	D	O	F	S	H	O	C	K	N	N	O	P
H	A	P	P	Y	O	U	Q	H	O	P	E	S	Y	F
O	B	A	N	G	E	R	R	L	T	P	R	I	D	E
P	W	I	H	J	U	P	S	E	T	K	V	M	B	A
E	O	N	S	Y	C	R	A	G	E	P	O	L	Y	R
F	R	D	F	G	H	I	N	O	K	T	U	S	Z	O
U	R	H	J	B	D	S	A	D	O	B	S	K	J	C
L	Y	F	L	O	V	E	Q	Z	T	U	W	V	B	A
S	C	A	R	E	D	F	J	R	M	O	K	S	T	L
E	M	B	A	R	R	A	S	S	M	E	N	T	F	M

7.3

(1) (क) कोहलबर्ग

(ख) उत्तर पारम्परिक नैतिकता

(2) (क) नियमपालन की नैतिकता तथा रजामंदी की नैतिकता

(ख) सार्वभौमिक, निश्चित

7.4

1. (क) (ii)

(ख) (v)

(ग) (iv)

(घ) (i)

(ङ) (iii)

(2) (क) संवेदी क्रियात्मक अवस्था, पूर्व-संक्रियात्मक अवस्था, मूर्त-संक्रियात्मक तथा अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था

(ख) संरक्षण (conservation)

(ग) आत्मकेन्द्रित

(घ) डेफर्ड अनुकरण

(ङ) परिकल्पित-निगमनात्मक तर्कशक्ति

7.5

(1) (क) बोध

(ख) रोना

(ग) महत्वपूर्ण

(घ) ग्रहण करके, स्पष्ट रूप से

(2) (क) सत्य

(ख) असत्य

(ग) असत्य

सन्दर्भ

- Berk, L. (2012). *Child Development (9thEdition)*. Prentice Hall of India.

टिप्पणी

- Hurlock, E.B. (2007). *Developmental Psychology: A life –span approach*. New Delhi: Tata Mc Graw-Hill.
- Santrock, J.W. (2011).*Child Development (13th Ed.)*.New Delhi: Mc Graw Hill.
- Santrock, J. W. (2012). *Life Span Development (13th Ed.)*. New Delhi: Mc Graw Hill.
- Singh, A. (Ed). (2015). *Foundations of Human Development*. New Delhi: Orient Blackswan.
- Srivastava, A.K. (1997). *Child Development: An Indian Perspective*. New Delhi: NCERT.